



ॐ
॥ श्री गंगा स्तुति ॥
॥ ॐ जय गंगे माता ॥

FULL DISCLAIMER

This book is for educational, inspirational, and cultural purposes only. The remedies, rituals, affirmations, breathing methods, and spiritual practices described are based on traditional beliefs, historical customs, and personal development principles. They are not guaranteed solutions.

This book does not replace advice from licensed doctors, psychologists, financial advisors, lawyers, or other qualified professionals. If you have medical symptoms, mental health concerns, legal matters, or financial risk, seek professional help.

Use all remedies responsibly, ethically, peacefully, and according to local law. Do not use fire, herbs, fasting, incense, or physical practices in unsafe ways. The author and publisher are not liable for misuse.

Results in life depend on effort, discipline, timing, environment, skill, and many other factors. No spiritual method guarantees money, marriage, success, healing, or protection.

Hargharpanditji

"PUJA ON YOUR SCREEN, BLESSINGS
AT YOUR DOOR"

॥ श्री गंगा स्तुति ॥

देवि! सुरेश्वरि! भगवति गङ्गे।
त्रिभुवनतारिणि तरलतरङ्गे॥
शङ्करमौलिविहारिणि विमले।
मम मतिरास्तां तव पदकमले॥१॥

भागीरथि! सुखदायिनि मातः।
तव जलमहिमा निगमेषु ख्यातः॥
नाहं जाने तव महिमानं।
त्राहि कृपामयि मामज्ञानम्॥२॥

हरिपदपाद्यतरङ्गिणि गङ्गे।
हिमविधुमुक्ताधवलतरङ्गे॥
दूरीकुरु मम दुष्कृतिभारं।
कुरु कृपया भवसागरपारम्॥३॥

तव जलममलं येन न पीतं।
परमपदं खलु तेन न गृहीतम्॥
मातर् गङ्गे! त्वयि यो भक्तः।
किल तं द्रष्टुं न यमः शक्तः॥४॥

पतितोद्धारिणि जाह्नवि गङ्गे।
खण्डितगिरिवरमण्डितभङ्गे॥
भीष्मजननि! मुनिवरकन्ये।
पतितनिवारिणि त्रिभुवनधन्ये॥५॥

कल्पलतामिव फलदां लोके।
प्रणमति यस्त्वां न पतति शोके॥

पारावारविहारिणि गङ्गे।
विमुखयुवतिकृततरलापाङ्गे॥६॥
तव कृपया चेत् पुनरपि जठरे।
सोऽपि न जातः किल नरलोके॥

नरकनिवारिणि गङ्गे मातः।
कलुषविनाशिनि महिमातिशायिनि॥७॥
जय जय जाह्नवि करुणापाङ्गे।
इन्द्रमुकुटमणिराजितचरणे॥

सुखदे शुभदे सेवकशरण्ये।
रोगं शोकं पापं तापं।
हर मे भगवति कुमतिकलापम्॥८॥
त्रिभुवनसारे वसुधाहारे।

त्वमसि गतिर्मम खलु संसारे॥
अलकानन्दे परमानन्दे।
कुरु करुणां मयि कातरवन्द्ये॥९॥
तव तटनिकटे यस्य निवासः।

खलु वैकुण्ठे तस्य निवासः॥
वरमिह नीरे कमठो मीनः।
किं वा तीरे शरटः क्षीणः॥१०॥
अथवा श्वपचो दीनस्तव तटे।

न हि दूरस्थो नृपति कुलीने॥
भो भुवनेश्वरि पुण्ये धन्ये।
देवि द्रवमयि मुनिवरकन्ये॥११॥
गङ्गास्तवमिदममलं नित्यं।

पठति नरः सततं सुभक्त्या॥
स जयति सत्यं विशुद्धचित्तः।
परमपदं स लभते निश्चितम्॥१२॥

॥ हिन्दी भावार्थ ॥

हे देवताओं की अधिष्ठात्री, भगवती गंगा! आप तीनों लोकों का उद्धार करने वाली, पवित्र और कल्याणकारी हैं। भगवान शिव की जटाओं में विराजमान होकर आपने समस्त संसार का कल्याण किया। जो श्रद्धापूर्वक आपका स्मरण, स्तुति और पूजन करता है, उसके पाप, दुःख और भय दूर होते हैं। आपकी कृपा से मन शुद्ध होता है, जीवन में सुख-समृद्धि आती है तथा अंत समय में भगवान के दिव्य धाम की प्राप्ति होती है।

॥ फलश्रुति ॥

जो भक्त प्रतिदिन श्रद्धा और भक्ति से इस श्री गङ्गा स्तुति का पाठ करता है, उसे माँ गंगा की कृपा प्राप्त होती है। उसके पापों का क्षय होता है, मानसिक शांति, आरोग्य, सौभाग्य और आध्यात्मिक उन्नति प्राप्त होती है तथा अंततः मोक्ष का मार्ग प्रशस्त होता है।

Hargharpanditji
"PUJA ON YOUR SCREEN, BLESSINGS
AT YOUR DOOR"